मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

माह : मई 2026

संकलन - मिशन शिक्षण संवाद बाल साहित्य सृजन टीम

01/05/2026

शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1

दादा-दादी

दादा जी मुझे करते प्यार,
दादी जी भी लाड़ लड़ाती।
रात को जब मैं सोता हूँ,
रोज कहानी मुझे सुनाती।।

दादा दादी जब घूमने जाते,
मुझको भी पार्क ले जाते।
खाना अपने साथ खिलाकर
अच्छी बातें खूब सिखाते।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

मेरी पतंग

मेरी छोटी सी पतंग,
आज हवा में उड़ रही।
रंग बिरंगी सी पतंग,
मेरी तरफ देख रही।।

पतंग-पतंग का खेल,
दोस्तों के संग खेलेंगे।
आज पूरे दिन हम सब,
दोस्तों संग मस्ती करेंगे।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

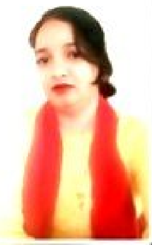

3

मेरी माँ

माँ मेरी हैं सबसे प्यारी,
सबसे अच्छी सबसे प्यारी।
अच्छी बातें मुझे सिखातीं,
मुझ पर खूब दुलार बरसातीं।।

रूठ जाऊँ जो कभी मैं उनसे,
आकर वो मुझे मानतीं।
पौष्टिक खाना मुझे खिलातीं,
गुस्से में भी प्यार दिखातीं।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

मेरे पँख

अगर लग जाये मेरे पँख,
पक्षी बन मै उड़ जाऊँ।
दूर-दूर तक पँख पसार,
सारे जहाँ की खबर लाऊँ।।

फूलों का रसपान कर,
मस्ती मे झूमू, इठलाऊ।
तितली, भँवरे आदि सॅग,
मधुर संगीत गुनगुनाऊ।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

02.05.2026

शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1

पेंसिल

रंग–रंगीली बड़ी सजीली,
पेंसिल लिखती जाए।
आड़ी–तिरछी,सीधी–साधी,
लिखकर ये दिखलाए।।

चित्र बनाए रंग भरी यह,
कॉपी पर सरपट लिखकर।
सब बच्चे हो जाते हैं खुश,
नई–नई पेंसिल पाकर।।

सुषमा त्रिपाठी स०अ०
कं० उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर),गोरखपुर

2

किताबें

नई किताबें मैंने पाई,
बहुत ज्यादा खुशी आई।
रंग-बिरंगे पेजों वाली,
सुन्दर-सुन्दर चित्रो वाली।।

नया बैग और नई किताबें,
जिनसे सीखें और सिखाएं।
वे किताबें मन को भाती,
जो हैं हमको निपुण बनाती।।

रचना
सुमन पाण्डेय प्र.अ
प्रा.वि.टिकरी-मनौटी
खजुहा,फतेहपुर

3

कॉपी

मम्मी मेरी बात सुनो,
मुझको कॉपी एक दिला दो।
मैडम मेरी मुझको डाँटे,
कहती एक कॉपी लाकर दो।।

सुन्दर-सुन्दर अक्षर लिखकर,
मैडम को मुझे दिखाना है।
क ख ग, ए बी सी,एक दो तीन,
लिखकर सबका मान बढ़ाना है।।

रचना -
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
क० वि० अमौली, अमौली,
फतेहपुर

4

रबड़

साधारण सा पर अनोखा साथी,
जिससे सारी गलतियां मिट जाती।
सिखाता हमे लचीलापन,
खूबियां इसकी नही है कम।।

इसके बिना स्कूल अधूरा,
पेंसिल संग मिलकर यह पूरा।
सिखाया इसने सबक प्यारा,
नया मौका दिया दोबारा।।

रचना
रूपी त्रिपाठी(स०अ०)
उ०प्रा०वि०लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

बाल साहित्य सृजन

1

नयी कक्षा

माह अप्रैल का आया,
नयी कक्षा में प्रवेश पाया।
पुरानी कक्षा से आगे,
एक कदम है बढ़ाया।।

नयी कक्षा, नयी किताबें,
सब कुछ नया-नया होगा।
बोझ बढ़ेगा थोड़ा-सा,
प्रयास हमें करना होगा।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

2

गर्मी की छुट्टी

हर बच्चे को रहता इन्तजार,
कब आएगी गर्मियों की छुट्टी?
घूमने जाएँगे नाना के घर,
होती बहुत ही अच्छी छुट्टी।।

छुट्टियों में होता समर कैम्प,
जिसमें बच्चे मौज-मस्ती करते।
ठण्डे-ठण्डे पानी पुल में,
उछल-कूद भरपूर करते।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
निवाड़ा, बागपत

3

समर कैम्प

समर कैम्प का आयोजन,
होगा अब स्कूल में।
धूम मचेगी, मस्ती होगी,
नहाएँगे हम पूल में।।

कला में खूब रंग भरेंगे,
सजेंगे सुर संगीत में।
खेल खेलेंगे नए-नए,
साथ रहेंगे हार-जीत में।।

रचना-
बृजराजसारस्वत (स०अ०)
उ० प्रा० वि० गोपालगढ़ (1-8)
नगरक्षेत्रमथुरा, मथुरा

4

गृहकार्य

जब आते घर से स्कूल,
करते हैं थोड़ा आराम।
फिर ले कॉपी और किताबें,
करते हैं गृहकार्य तमाम।।

करते हिन्दी, अंग्रेजी की,
मन से हम हैं खूब पढ़ाई।
गणित और विज्ञान विषय भी,
लिख-पढ़ पूरा कर लो भाई।।

रचना-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

05.05.2026

मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1

प्रातः काल

सुवह-सवेरे उठकर के,
नमन प्रभु को करते हैं।
सूरज, नभ में दिखता है,
पक्षी उड़ने लगते हैं।।

मात-पिता और सभी बढ़े,
हमें बड़े प्यार से बुलाते हैं।
गोदी में बिठाकर के,
अच्छी बात सिखाते हैं।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

2

सूरज

गोल-मटोल आग का गोला,
अन्धकार को दूर भगाता।
सौरमण्डल का एक तारा,
पूरे जगत को रोशन कराता।।

भानू, दिवाकर, दिनकर,
और भास्कर भी कहलाता।
पृथ्वी पर ऊष्मा का श्रोत,
अपनी जगह से कभी ना हटता।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० विद्यालय- राजपुर
मथुरा, मथुरा

3

जाग जाओ

सूरज उगा आसमान में,
खिल गये कमल ताल में।
जाग जाओ, उठो तुम,
एक हलचल हो रही संसार में।।

देश के हो तुम पुजारी,
सूर्य बनकर जगमगाओ।
दूर धरती से हो अँधेरा,
जाग जाओ! जाग जाओ।।

रचना-
प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)
के०जी०बी०- नगर क्षेत्र
नगरक्षेत्र, कासगंज

4

उठ जाओ

सुबह हुयी, अब उठ जाओ,
आलस को तुम दूर भगाओ।
अपने सारे काम निपटाओ,
बस्ता लेकर स्कूल जाओ।।

चिड़िया चीं-चीं चहक रही हैं,
पेड़ो में कलियाँ महक रही हैं।
समय से जो हैं काम निपटाते,
वह अच्छे बच्चे कहलाते।।

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

06/05/2026

बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

नई पुस्तकें

नई कक्षा मे नई पुस्तकें मिली,
बच्चों के दिल को खुशी मिली।
एक नई ताज़गी,ऊर्जा भर देती,
पढ़ने मे खूब रूचि जगा जाती।।

नई पुस्तकों मे चित्र बहुत सलोने,
आकर्षक,लुभावने मोहक न्यारे।
इनसे सीखने को नया ज्ञान मिलेगा,
पढ़ने मे भी खूब आनन्द आयेगा।।

इला सिंह(स.अ)
कम्पोजिट विद्यालय पनेरूवा
अमौली फतेहपुर

2

छुट्टियों का आनंद

छुट्टियों में बड़ा आनंद आता,
घूमने को हमें खूब मिलता।
गांव में भी जब हम जाते हैं,
ट्यूबवेल के पानी में नहाते हैं।।

बागों में भी हम घूमते हैं,
चारों ओर हरियाली देखते हैं।
आपस में मिल खेलते हैं,
मिला होमवर्क भी कर लेते हैं।।

माला सिंह(स०अ०)उच्च
प्रा०वि०-भरौटा(1-8)
ब्लॉक-सरधना
जनपद-मेरठ

3

नानी का घर

गर्मी की छुट्टीयां आयेगी,
नानी के घर हम जायेंगे।
नाना-नानी संग खेलेंगे,
खूब मौज-मस्ती करेंगे।।

बगीचों से आम तोड़ेंगे,
मिलकर सब फिर खायेंगे।
नानी का घर खूब भाता,
वहां से आने का मन न करता।।

आरती यादव(स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय रनियां -1
सरवनखेड़ा कानपुर देहात

4

सैर-सपाटा

सैर सपाटा को हम जाएंगे,
घूम फिरकर वापस आएंगे।
संग लेंगे हम पूरा परिवार,
नाच गाकर मचाएंगे धमाल।।

नास्ता,खाना जूस और फल,
साथ होगा टिंकू छोटू दल।
अब ना रूकें हम सैर पर चलें
रोमांचक सफर में हम रहें डटे।।

नीलम भास्कर (स०अ०)
पी एम श्री उ०प्रा०वि०सिसाना
बागपत, बागपत

07/05/2026

बाल साहित्य सृजन

गुरुवार

1

हमारा स्कूल...

स्कूल हमें है अच्छा लगता,
स्कूल हमारा हमसे सजता।
हम नन्हे बच्चे छोटे-छोटे,
स्कूल चलें हम लेकर बस्ता।।

यहां दोस्त हैं प्यारे-प्यारे,
उनके संग मन खूब लगता।
स्कूल खुला है सबके लिये,
चाहे लड़की हो, या हो लड़का।।

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2

हॉलिडे होमवर्क

हॉलिडे होमवर्क आया है,
साथ में खुशियाँ लाया है।
थोड़ा लिखना, थोड़ा पढ़ना,
रोज़ नया कुछ अच्छा करना॥

चित्र बनाओ, कविता गाओ,
मम्मी-पापा को भी सुनाओ।
मस्ती करके सीखेंगे हम,
छुट्टी में भी आगे बढ़ेंगे हम॥

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3

मेरा स्कूल

लो जी मैं तो चला स्कूल,
बाकी सारी बातें भूल।
पढ़ने मुझको जाना है अब,
बना लिया मैंने ये रूल।।

प्यारा सा स्कूल है मेरा,
टीचर भी है बहुत ही प्यारे।
खेल-खेल में मुझे सिखाते,
ढंग पढ़ाई के है न्यारे।।

पारुल चौधरी (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4

गर्मी की छुट्टी

गर्मी जब बहुत बढ़ जाती है,
स्कूल से छुट्टी हो जाती है।
मौज-मस्ती के दिन है आते,
तरबूज, लीची, आम हम खातें।।

इनडोर गेम हम खेलें खूब,
घर में धमाचौकड़ी मचाते खूब।
कमर कैंप में हम लाभ उठाते,
नानी के घर हम घूमने जाते।।

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

बाल साहित्य सृजन

1

मेरी बिल्ली

मेरी बिल्ली काली है,
वह सबसे मतवाली है।
अच्छा लगता उसको दूध,
हलवा पूरी खाती है।।

चूहे की दुश्मन है पक्की,
उनको खूब भगाती है।
हाथ अगर आ जाए चूहा
झट से वह खा जाती है।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

मेरी प्यारी बिल्ली

मेरी प्यारी छोटी सी बिल्ली,
म्याऊँ-म्याऊँ करके बोल रही।
काले-सफेद रंग की बिल्ली,
चारों तरफ देखो घूम रही।।

सुबह जल्दी उठ कर,
मेरी साथ बॉल खेलती है।
मेरे स्कूल से आने पर,
उछल कूद खूब करती है।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3

बिल्ली मौसी

बिल्ली बोली म्याऊँ म्याऊँ,
आज मैं कितने चूहे खाऊँ।
कल नही खाया मैंने कुछ भी,
आज तो मैं जी भर कर खाऊँ।।

बाजार फिर मैं घूमने जाऊँ।
चश्मा, टोपी खरीद के लाऊँ,
हो गई है बहुत ही गर्मी,
ठण्डी जगह में घूम के आऊँ।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

बिल्ली

रंग-बिरंगी, काली, भूरी
कितनी प्यारी होती बिल्ली।
दूध-मलाई, रोटी-पानी
झटपट खा जाती बिल्ली।।

उछल-कूद करती फिरती,
म्याऊँ-म्याऊँ करती बिल्ली।
रात को थक हारकर,
बिस्तर पर सो जाती बिल्ली।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

मिशन शिक्षण संवाद
· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·
09/05/2026 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1

एक आशा

हम छोटे-छोटे बच्चे हैं,
सपनों वाले अच्छे हैं।
पढ़-लिखकर आगे जाएँ,
देश का नाम चमकाएँ।।

मिल-जुलकर हम खेलें सब,
न करें कभी किसी से रब।
सच्चाई की राह अपनाएँ,
मम्मी-पापा का मान बढ़ाएँ।।

सुषमा त्रिपाठी स०अ०
कं० उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर),गोरखपुर

2

एक शौक

मैंने भी एक शौक है पाला,
बड़ा ही प्यारा बड़ा निराला।
हर दिन कुछ करते जाओ
आनंददाई शिक्षा वाला।।

पढ़ते जाओ और पढ़ाओ,
आगे बढ़ो और बढ़ाओ।
ज्ञानवर्धक शिक्षा पाओ,
पापा मम्मी का मान बढ़ाओ।।

रचना -
सुमन पांडेय
प्रा० वि० टिकरी मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

3

एक डर

बच्चों! मेरे सुनो कहानी,
बड़ी सयानी बड़ी निराली।
बड़ा काम करने की तुम ठानों,
निकलेगा डर यह तुम मानों।।

तुमको जब जीत मिलेगी,
डर की परछाईं नहीं मिलेगी।
बुरे काम से तुम डरना सीखो,
सही राह पर चलना सीखो।।

प्रतिमा उमराव (स०अ०)
क० वि० अमौली
अमौली, फतेहपुर

4

एक खुशी

सुबह उठकर मुस्कुराओ,
हर पल खुलकर नाचो गाओ।
हर पल मिलती एक खुशी,
तो जीवन खुशियों से भर लाओ।।

माँ का प्यार है बड़ा निराला,
खुशियों का छलकता प्याला।
पापा की गोद में बैठकर,
खुशियों के मिल जाते पल पल।।

रचना
रूपी त्रिपाठी(स0अ0)
उ0प्रा0वि0लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

बाल साहित्य सृजन

1

गाजर

पीली और होती नारंगी,
गाजर बड़ी कमाल।
सेहत का भरपूर खजाना,
विटामिन ए से मालामाल।।

खाते मीठा हलवा बनाकर,
और कच्चा भी खाते सलाद।
Carrot होती है अंग्रेजी,
गृन्जनम् भी रखना याद।।

रचना- शिखा वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

2

लौकी

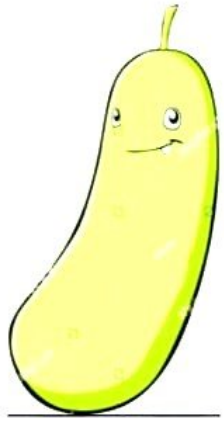

हरे रंग की सुन्दर लगती,
लौकी मन को भाती है।
लेकिन बच्चों को तो इसकी,
बर्फी खूब लुभाती है।।

सेहत का भरपूर खजाना,
सब्जी जानी-मानी है।
रायता, हलवा या कोफ्ता,
किसी भी रूप में खानी है।।

रचना- भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

3

टमाटर

गोल-गोल है लाल टमाटर,
विटामिन-सी से भरपूर टमाटर।
हर सब्जी में डाला जाता,
सलाद में भी यह खाया जाता।।

टमाटर की चटनी स्वाद बढ़ाती,
प्रत्येक व्यक्ति के मन को भाती।
खाया जाता विविध रूप में,
सबसे विशेष टमाटर का सूप।।

रचना- सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
निवाड़ा, बागपत

4

मूली

मूली होती है गुणकारी,
पत्तों सहित भी खा लो सारी।
चाहे सलाद में खा लो इसको,
या फिर बनवा लो तरकारी।।

पीलिया का भी रोग मिटाए,
लीवर को यह स्वस्थ बनाए।
वात रोग में है गुणकारी,
सेहत बढ़िया रहे हमारी।।

रचना- बृजराज सारस्वत (स०अ०)
उ० प्रा० वि० गोपालगढ़ (1-8)
नगरक्षेत्र मथुरा, मथुरा

12.5.2026

मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1

चिड़िया

नन्ही-नन्ही चिड़िया रानी,
मुझको लगती बडी सुहानी।
छत पर आती चिड़िया रानी,
मैं रखता उसको दाना-पानी।।

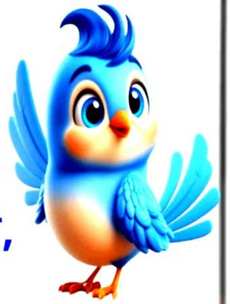

तिनका-तिनका चुनकर लाती,
मेहमत से अपना घर बनाती।
चीं-चीं-चीं इसकी बोली प्यारी,
यह देखने में है भोली-भाली।।

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

2

मौर

सबसे सुन्दर पक्षी लगता,
रंग भी सबसे न्यारा।
गर्दन लम्बी बल खाती,
चन्दा पंखों पर प्यारा।।

बरसें बादल हवा हो ठण्डी,
तो आवाज सुनाता।
पंख फैलाकर गोल घूमता,
सभी को नाच दिखाता।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

3

बगुला

सफेद रंग का बगुला होता,
लम्बी गर्दन वाला।
एक टांग पर खड़ा होकर के,
ध्यान लगाने वाला।।

नदी, झील और समुद्र किनारे,
बगुला देखा जाता।
एकाग्रता का उत्तम उदाहरण,
बगुला प्रस्तुत कराता।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० विद्यालय- राजपुर
मथुरा, मथुरा

4

कबूतर

पक्षी बहुत विशेष कबूतर,
सरल नवल सा वेश कबूतर।
लाते हैं, ले भी जाते हैं,
नये-नये संदेश कबूतर।।

प्रेम, प्रीति की होड़ा-होड़ी,
भोजन की इच्छा भी थोड़ी।
नही अकेले देखे हमने,
रहती सदा साथ में जोड़ी।।

रचना-
प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)
के०जी०बी०- नगर क्षेत्र
नगरक्षेत्र, कासगंज

13/05/2026

बाल साहित्य सृजन

बुधवार

1

गर्मी के पकवान

गर्मी के पकवान खूब भाते,
मन को यह बहुत लुभाते।
आम का पना,लस्सी लगते भले,
तरबूज,खरबूज खाकर फूले फले।।

आइसक्रीम,शेक बहुत ललचाते,
खाकर इनको कभी ना हम थकते।
हर मौसम के पकवानो का है मजा,
इनका सेवन करना रहता सेहतमंद भरा।।

इला सिंह(स.अ)
कम्पोजिट विद्यालय पनेरूवा
अमौली फतेहपुर

2

छुट्टियों की सैर

स्कूल की छुट्टियाँ होने वाली है,
छुट्टियों में सैर करने जाएंगे।
नाना-मामा के घर,
खूब मौज मनाएंगे।।

मौसी हमको प्यार करती,
बाजार भी ले जाएगी।
सुंदर-सुंदर खेल खिलौने,
कपड़े भी दिलवाएगी।।

माला सिंह(स०अ०)उच्च
प्रा०वि०-भरौटा(1-8)
ब्लॉक-सरधना
जनपद-मेरठ

3

मामा का बाग

छुट्टीयों का समय आया,
नानी के घर हम जायेंगे।
मामा का बाग खूब भाया,
मस्ती वहां दोस्तों संग करेंगे।।

फल पेड़ों से तोड़ेंगे,
छांव में उनकी खेलेंगे।
डालों में झूला भी डालेंगे,
मिलकर सारे खेल खेलेंगे।।

आरती यादव(स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय रनियां -1
सरवनखेड़ा कानपुर देहात

4

कामिक्स की दुनिया

गर्मियो की छुट्टियाँ है आयी,
कामिक्स की दुनिया मे लायी।
चाचा चौधरी,साबू का याराना,
बिल्लू, मोटो पतलू का तराना।।

पिंकी के कारनामे लगते प्यारे,
नागराज के हर वार अलग न्यारे।
कामिक्स की दुनिया बहुत भाती,
हमारे चेहरो पर मुस्कान ले आती।।

नीलम भास्कर (स०अ०)
पी एम श्री उ०प्रा०वि०सिसाना
बागपत, बागपत

14/05/2026

बाल साहित्य सृजन

गुरुवार

1

छोटे बच्चें

छोटे बच्चे, मन के सच्चे,
स्कूल आते बनकर अच्छे।
बड़ो की बात मानते हैं,
किसी को नहीं तंग करते।।

मां की याद आये कभी तो,
मैडम के पास आ जाते।
काम भी लेते, काम भी करते,
आपस में खूब बतियाते।।

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2

खेल-खेल में सीखें हम

खेल-खेल में सीखें हम,
मिलकर सारे हँसते हम।
दौड़ लगाएँ, कूद दिखाएँ,
नई-नई खुशियाँ हम पाएँ॥

गेंद, रस्सी और पतंग,
खेलों से भर जाए उमंग।
खेल हमें ताकत देते,
मिलजुल कर रहना सिखाते॥

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3

शिक्षा की बुनियाद

अ से अम्मा, आ से आम,
स्वर, व्यंजन का लो ज्ञान।
ए से एप्पल, बी से बॉल,
अंग्रेजी में लगा के ध्यान।।

गिनती, पहाड़े, जोड़, घटा,
गुणा, भाग, गणितीय पहचान।
विद्यालय जाकर सीखेंगे जब,
परख जायेंगे तब विज्ञान।।

पारुल चौधरी (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4

आम

कच्ची केरी, पक्का आम,
फलों का राजा होता आम।
शक्कर, पुदीना, केरी करें कमाल,
लू से बचाये, करो इनके गुणगान।

देसी, दशहरी, हाफ़ूस लंगड़ा आम,
बनते अचार, हो व्यंजन के शान।
बच्चे-बूढ़े सबको हैं, यह भाते,
गर्मी में हम लुत्फ उठाते हैं।।

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · मिशन शिक्षण संवाद · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

15/05/2026

शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1

अच्छे बनो

आओ बच्चों खेलें खेल,
आपस में तुम रखना मेल।
करना नहीं कभी लड़ाई,
तब होगी तुम्हारी बड़ाई।।

कभी नहीं तुम झूठ बोलो,
अच्छा बोलो मीठा बोलो।
बनना तुम अच्छे इंसान,
सदा बढ़ाना देश की शान।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

छोटे बच्चे

हम छोटे-छोटे बच्चे,
होते मन के सच्चे।
साथ पढ़ाई करते हैं,
किसी से न डरते हैं।।

रंग बिरंगी गेंदों से,
हम दोस्ती करते हैं।
नयी-नयी किताबों से,
पढ़ाई भी तो करते हैं।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

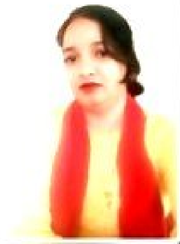

3

प्यारे बच्चों

प्यारे बच्चों भूल जा जाना,
सदाचार को तुम अपनाना।
सत्य की राह पर चलकर,
आगे को बढ़ते ही जाना।।

राह हो कितनी भी मुश्किल,
तुम कभी न घबाराना।
बड़ो का आशीर्वाद लेकर,
व्यक्तित्व महान बनाना।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

नेक बनें

जीवन में करे सद्कर्म,
सबका रखे ध्यान।
प्रतिदिन स्वाध्याय कर,
प्राप्त करें नव ज्ञान।।

नेक बनें, वीर बनें,
करें सबका सम्मान।
दीपक बन, रोशनी से,
दूर करें अज्ञान।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

16.05.2026

शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1

प्यारा आम

प्यारा–प्यारा आम सजीला,
हरा–हरा ये पीला–पीला।
बच्चों के मन खूब ये भाये,
आप जूस,पना ललचाए।।

पाचन शक्ति बढ़ाने वाला,
इम्यूनिटी का ये रखवाला।
त्वचा को चमका देता है,
सबका दिल हर्षा देता है।।

सुषमा त्रिपाठी स०अ०
कं० उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर),गोरखपुर

2

मीठी लीची

लाल गुलाबी सुंदर लींची,
मुझको भाती मीठी लीची।
पापा कल लाये थे लीची,
सबने मिलकर खाई लीची।।

पूर्वोत्तर में होती लीची,
बड़ी ही सुंदर दिखती लींची।
गुच्छे में लगती है लीची,
बहुत स्वादिष्ट होती लीची।।

रचना
सुमन पाण्डेय प्र.अ
प्रा० वि० टिकरी मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

3

ठण्डी आइसक्रीम

जब-जब गर्मी आये,
सब बच्चों का मन ललचाये।
प्यासे मन को भाये,
सबके मन को ठंडक पहुँचाये।।

जन्मदिन, शादी पार्टी में,
अपनी खास पहचान बनाये।
वनीला, स्ट्रॉबेरी, कुल्फी,
स्वाद में गर्मी से राहत दिलाये।।

रचना-
प्रतिमा उमराव स०अ०
क० वि० अमौली
अमौली, फतेहपुर

4

देसी जूस

देसी जूस है अमृत जैसा,
स्वस्थ्य रहे मुस्कान हमेशा।
फल खाओ और जूस बनाओ,
चुस्की लेकर पीते जाओ।।

आम, नीबू, अनार, गन्ना,
इनका जूस रोज है पीना।
ताकत, जोश बढाए खूब,
स्वाद और सेहत से भरपूर।।

रचना
रूपी त्रिपाठी(स०अ०)
उ०प्रा०वि०लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

बाल साहित्य सृजन

1

कबूतर

यह छोटा सा पक्षी प्यारा,
ले जाता संदेश हमारा।
सिलेटी और सफेद रंग का,
गले पर धारी, लगता ढंग का।।

शान्ति दूत भी इसको कहते,
सबके ही यह घर में रहते।
गुटुर गूँ-गुटुर गूँ इसकी बोली,
सूरत इसकी कितनी भोली!

रचना-
बृजराजसारस्वत (स०अ०)
उ० प्रा० वि० गोपालगढ़ (1-8)
नगरक्षेत्रमथुरा, मथुरा

2

तोता

हरे रंग का पक्षी तोता,
चोंच लाल रंग होती है।
शुक: संस्कृत नाम है इसका,
Parrot अंग्रेजी होती है।।

पिंजरे में रहकर ये मिठ्ठू,
मिर्ची, आम कुतरता है।
नकल उतारे सबकी हरदम,
सबको अच्छा लगता है।।

रचना-
शिखा वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

3

कौआ

काले रंग का पक्षी यह,
Crow कहते अंग्रेजी में।
संस्कृत में काक: कहते,
पूजा जाता श्राद्ध में।।

काँव-काँव करता है जब,
मेहमान आते हैं तब।
अब कम दिखायी देता,
लुप्त होने लगा है अब।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

4

मोर

पंख फैलाकर नाच रहा है,
देखो! कितना सुन्दर मोर।
रंग-बिरंगे पंखों के साथ,
मन को मोहे देखो, दिलचोर।।

आया सावन नाचे मोर,
बसन्त ऋतु में झूमे मोर।
पंख आते हैं बहुत ही काम,
बनते सजावट के सामान।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
निवाड़ा, बागपत

बाल साहित्य सृजन

1

कॉपी

मेरी कॉपी बड़ी निराली,
मेरा साथ निभाने वाली।
अपनी पेन्सिल कलम सँभालो,
जो भी चाहो वह लिख डालो।।

जैसे चाहो चित्र बना लो,
इस कॉपी को मित्र बना लो।
इसमें काम फेयर करते हैं,
मित्रों को शेयर करते हैं।।

रचना-
प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)
के०जी०बी०- नगर क्षेत्र
नगरक्षेत्र, कासगंज

2

पेन्सिल

पेन्सिल से लिखते सारे,
शब्द बनाते प्यारे-प्यारे।
कटर से छीलें नोंक बनाएँ,
सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाते।।

पहला अक्षर यही सिखाती,
गलती करें तो मिट भी जाती।
ज्ञान हमारा यही बढ़ाती,
प्यारे-प्यारे रंगों में आती।।

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

3

किताब

स्कूल में जब पढ़ने आएँ,
बच्चों को किताब मिले।
रंग-बिरंगे चित्र बने हैं,
पशु-पक्षी, पहाड़, किले।।

चित्र देख पहचानें बच्चे,
छोटे जो पढ़ नहीं सकते।
बोल-बोलकर याद वो करते,
कविता गाते नहीं थकते।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

4

स्कूल

शिक्षा जहाँ पर प्राप्त करते,
स्कूल उसे हम कहते।
छोटे-छोटे कदमों से,
बच्चे जहाँ प्रवेश करते।।

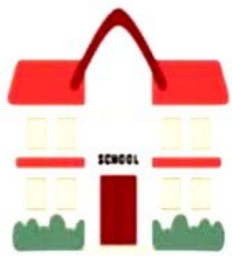

सर्वांगीण-विकास बच्चे,
स्कूल में प्राप्त है करते।
विद्या के घर को हम,
'पाठशाला' भी कहते।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि० -राजपुर
मथुरा, मथुरा

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · मिशन शिक्षण संवाद · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·
20/05/2026 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

नानी की कहानियाँ

बचपन की याद जब आती है,
मीठी सी मुस्कान दे जाती है।
रात मे छत पर नानी के पास सोना,
उनका कहानियों का ताना-बाना बुनना।।

उनकी कहानियों मन को लुभाती,
कुछ पहेलियाँ पीछे छोड़ भी जाती।
परियों, जादूगर की कहानियाँ भाती,
ये सब कहानियाँ नानी की याद दिलाती।।

इला सिंह(स.अ)
कम्पोजिट विद्यालय पनेरूवा
अमौली फतेहपुर

2

गुड़िया का विवाह

बचपन में खेला करते थे,
एक छोटी गुड़िया से।
उसका उसका विवाह कराया,
एक छोटे गुड्डे से।।

ढोल-धमाके के साथ,
आए सभी बाराती।
बढ़िया सी दावत खा करके,
नाचे खूब बाराती।।

माला सिंह(स०अ०)उच्च
प्रा०वि०-भरौटा(1-8)
ब्लॉक-सरधना
जनपद-मेरठ

3

बचपन की यादें

बचपन लगता बड़ा प्यारा,
अच्छी यादों से होता भरा।
दोस्तों का साथ इसमें होता,
किसी से न झगड़ा होता।।

किसी बात की चिन्ता न होती,
करते रहते बस मौज-मस्ती।
खेलना पढ़ना बस काम होता,
दादी-नानी का साथ भी होता।।

आरती यादव(स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय रनियां -1
सरवनखेड़ा कानपुर देहात

4

दादी के किस्से

दादी के किस्से बहुत ही भाते,
उस गुजरे जमाने की याद दिलाते।
हर बात पर दादी का कोई किस्सा होता,
मन को हँसाने और ज्ञानवर्धक होता।।

दादी के किस्से सरल,सहज होते,
उदास मन को खुशी से भर देते।
दादी का जमाना अब गुजर गया,
उनके किस्सो का संसार रह गया।।

नीलम भास्कर (स०अ०)
पी एम श्री उ०प्रा०वि०सिसाना
बागपत, बागपत

बाल साहित्य सृजन

1

किताबें

मुझे किताबें हरदम भाती,
कितनी सारी बात बताती।
कभी गणित में उलझायें,
कभी जगत की सैर कराती।।

भाषाओं का ज्ञान कराती,
विज्ञान से भी मेल कराती।
सबसे अच्छी दोस्त हमारी,
किताबें ही तो कहलाती।।

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2

स्कूल पढ़ने जाए हम

स्कूल क्यों पढ़ने आए बच्चे,
सपनों को सच बनाने बच्चे।
किताबों से ज्ञान मिलेगा,
जीवन में सम्मान मिलेगा॥

गिनती, कविता, खेल सीखेंगे,
मिलकर आगे बढ़ते जाएंगे।
अच्छे इंसान बनेंगे हम,
रोशन अपना कल करेंगे हम॥

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3

प्यारे बच्चे

जैसे सूरज, चाँद और तारे,
दिखते हैं हर किसी से न्यारे।
वैसे ही प्यारे बच्चों तुम,
मुझको लगते हो बड़े प्यारे।।

भोले भाले जुबां के सच्चे,
दिल से करते हो हर काम।
पढ़-लिखकर तुम आगे बढ़ना,
यही दुआ हो तुम्हारा नाम।।

पारुल चौधरी (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4

गर्मी आई

गर्मी आई ,गर्मी आई
संग में तेज धूप, पसीना लाई ।
लू के थपेड़े लगते हैं गरम,
पानी से नहाते रहते हम।।

स्कूल की छुट्टी की खबर है आई,
नानी के घर हम जाएंगे भाई।
मौज-मस्ती और घुम्मी होगी,
आम,आइसक्रीम, कुल्फी होगी।।

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

22/05/2026

शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1

खूब पढ़ो

बच्चों खूब पढ़ना है,
तुमको आगे बढ़ना है।
मात पिता का जग में
नाम रोशन करना है।

सुपथ पर तुम्हें चलना है,
प्रेम सभी से करना है।
देश धर्म की लेके शिक्षा
प्रगति का हिस्सा बनना है।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

नानी का घर

गर्मियों की छुट्टियों में,
हम नानी के घर जायेंगे।
हम नाना-नानी के संग,
खूब आम-अमिया खायेंगे।।

रोज नयी-नयी कहानियाँ,
नानी हमें रात में सुनाती हैं।
रोज नये-नये पकवान भी,
हमें बनाकर खिलाती हैं।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

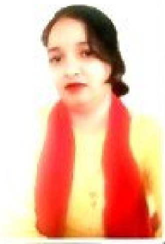

3

खेलें खेल

आओ हम खेलें खेल,
मिलकर बनाएँ रेल।
इंजन आगे, डब्बे पीछे,
आगे बढ़ती जाए रेल।।

बच्चे पकड़े हाथ तो और,
लंबी होती जाती रेल।
कभी इधर तो कभी उधर,
खूब शोर मचाए रेल।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

गर्मी आई

गर्मी आई, गर्मी आई,
बच्चों की छुट्टियाँ लाई।
पढ़ाई से मिली छुट्टी,
कुछ दिनों की मस्ती छाई।।

नाना, मामा, चाचा, ताऊ,
मिल रहे सब बहन-भाई।
खाना-पीना, हंसना-गाना,
ठण्डी कुल्फी मन को भायी।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

22/05/2026

शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 खूब पढ़ो

बच्चों खूब पढ़ना है,
तुमको आगे बढ़ना है।
मात पिता का जग में
नाम रोशन करना है।

सुपथ पर तुम्हें चलना है,
प्रेम सभी से करना है।
देश धर्म की लेके शिक्षा
प्रगति का हिस्सा बनना है।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2 नानी का घर

गर्मियों की छुट्टियों में,
हम नानी के घर जायेंगे।
हम नाना-नानी के संग,
खूब आम-अमिया खायेंगे।।

रोज नयी-नयी कहानियाँ,
नानी हमें रात में सुनाती हैं।
रोज नये-नये पकवान भी,
हमें बनाकर खिलाती हैं।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3 खेलें खेल

आओ हम खेलें खेल,
मिलकर बनाएँ रेल।
इंजन आगे, डब्बे पीछे,
आगे बढ़ती जाए रेल।।

बच्चे पकड़े हाथ तो और,
लंबी होती जाती रेल।
कभी इधर तो कभी उधर,
खूब शोर मचाए रेल।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4 गर्मी आई

गर्मी आई, गर्मी आई,
बच्चों की छुट्टियाँ लाई।
पढ़ाई से मिली छुट्टी,
कुछ दिनों की मस्ती छाई।।

नाना, मामा, चाचा, ताऊ,
मिल रहे सब बहन-भाई।
खाना-पीना, हंसना-गाना,
ठण्डी कुल्फी मन को भायी।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

- आओ हाथ से हाथ मिलाएँ - **मिशन शिक्षण संवाद** - बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ -

23.05.2026 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1

सुनहरी धूप

सुनहरी धूप धरती पर,
मंद-मंद मुस्काती है।
हरियाली की कोमल चूनर,
खुशियों से लहराती है।।

सूरज की रौशन किरणें,
जीवन में प्रकाश भरें।
मेहनत, आशा और साहस से,
हम आगे नित ही बढ़ते रहें।।

सुषमा त्रिपाठी स०अ०
कं० उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर),गोरखपुर

2

सुहानी शाम

बड़ी सुहानी, सुंदर शाम,
खेलें-कूदें जब आती शाम।
पूरा कर स्कूल का काम,
मौज मस्ती कर पूरी शाम।।

बाहर निकले घर से बच्चे,
दोस्तों संग खेलते बच्चे।
चहलकदमी बढ़ जाती है,
जब आती है सुहानी शाम।।

रचना
सुमन पांडेय प्र.अ
प्रा० वि० टिकरी मनौटी,
खजुहा, फ़तेहपुर

3

नीला आकाश

नीला अम्बर सबके मन को भाये,
चाँदी सा चमकीला गगन सुहाये।
तरह-तरह चित्रों से सजा व्योम,
मानो नभ मन में उल्लास जगाये।।

उठती हिय में लहर खुशी की,
मानो चित्रकार कोई अन्तरिक्ष में।
दूर-दूर तलक आसमान फैला,
आशा की किरण जगाये मन में।।

रचना -
प्रतिमा उमराव स०अ०
क० वि० अमौली
अमौली, फतेहपुर

4

काले बादल

कभी अँधेरे में भी उठती,
आशा की किरण।
काले बादल देखकर,
मन हो जाता है हिरण।।

काले बादलों के बिन,
सूख जाता है ये संसार।
खिल उठता है मन,
जब तन पर पड़ती है फुहार।।

रचना
रूपी त्रिपाठी(स०अ०)
उ०प्रा०वि०लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.

शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

25.05.2026

बाल साहित्य सृजन

सोमवार

1

लीची

मूल निवास चीन में इसका,
उष्णकटिबन्धीय फल कहलाता।
स्वाद बहुत रसीला इसका,
सबके ही यह मन को भाता।।

बाहरी त्वचा खुरदरी होती,
अन्दर नर्म, मुलायम, श्वेत।
लीची नाम से जाना जाती।
गुठली होती भीतर एक।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
निवाड़ा, बागपत

2

खरबूज

गोल-गोल खा कर खरबूज,
गर्मी से तुम रहो महफूज।
खा कर इसको शरबत पीना,
ठण्डा हो जाएगा सीना।।

काट कर इस पर बूरा डालो,
बड़े प्रेम से इसको खा लो।
छोटे-बड़े सभी को भाता,
घर में सबके अक्सर आता।।

रचना-
बृजराजसारस्वत (स०अ०)
उ० प्रा० वि० गोपालगढ़ (1-8)
नगरक्षेत्रमथुरा, मथुरा

3

जामुन

काले जामुन मन को भाते,
गर्मी के मौसम में आते।
एक गुठली हो फल के अन्दर,
उछल-कूद करते हैं बन्दर।।

शुगर को गुठली करती समाप्त,
आयरन, कैल्शियम होता प्राप्त।
जम्बूफल है संस्कृत नाम,
किडनी स्टोन में आता काम।।

रचना-
शिखा वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

4

तरबूज

लाल फल में काले दाने,
गर्मी में अच्छे हैं खाने।
पानी से भरपूर है यह,
गुणों के भरे हैं खजाने।।

अंग्रेजी में watermelon,
हिन्दी में कहते तरबूज।
बच्चों को अच्छा लगता,
गर्मी का फल है तरबूज।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

26.05.2026

बाल साहित्य सृजन

मंगलवार

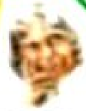

1

मक्खी

सामान्य उड़ने वाली कीट,
मक्खी है जो उड़ती।
गन्दे स्थानों, सढ़े-गले पदार्थों,
और कचरे पर है बैठती।।

खाने और पानी पर बैठकर,
अनगिनत रोग फैलाती।
हैजा, टाइफाइड, डायरिया,
रोगों की वाहक कहलाती।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि०- राजपुर
मथुरा, मथुरा

2

मधुमक्खी

पंख लिये सोने के जैसे,
उड़ती है मधुमक्खी।
फूल-फूल से लाकर मधु,
को धरती है मधुमक्खी।।

आती है और जाती है,
भन-भन करती है मधुमक्खी।
हाथ लगाया छत्ते से तो,
डस लेती है मधुमक्खी।।

रचना-
प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)
के०जी०बी०वि०- नगर क्षेत्र
नगरक्षेत्र, कासगंज

3

मच्छर

भुन-भुन करके पास में आते,
मच्छर, मलेरिया-रोग फैलाते।
ठण्ड लगती, बुखार आता,
मच्छर अगर काटकर जाता।।

मच्छरदानी रोज़ लगाओ,
मच्छर को तुम दूर भगाओ।
स्वच्छता को जो अपनाओगे,
तो मच्छर को दूर भगाओगे।।

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

4

तितली

रंग-बिरंगी तितली रानी,
फूलों पर मंडराती है।
बैठे पंखों को सिकोड़कर,
रस को चूस उड़ जाती है।।

कोई छोटी है कोई बड़ी है,
सिर, धड़, पुच्छ भाग पीछे।
पंख ऊपर लम्बा बँट जाता,
होता जाता छोटा नीचे।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

बाल साहित्य सृजन

1

बचपन के खेल

बचपन के खेल होते निराले,
ऐसे खेल पुरानी यादे दे जाते।
ना महँगे खिलौनें पास होते थे,
पर प्यारे साथी जरूर साथ होते।।

पेड़ो पर चढ़ना,पकड़न पकड़ाई,
गुड़िया का ब्याह,लुका छिपाई।
ऐसे खेल बहुत रस से भरे होते थे,
बिन पैसे खर्च किए सुकून देते थे।।

इला सिंह(स.अ)
कम्पोजिट विद्यालय पनेरूवा
अमौली फतेहपुर

2

दादा का गाँव

दादा के गांव जाएंगे,
मिलकर धूम मचाएंगे।
दादा मुझको प्यार करते,
खेतों पर घूमने ले जाते।।

गांव में एक बाग होता,
मेरा मन वहाँ खूब लगता।
पेड़ों पर जो फल लगते हैं,
मुझको बहुत लुभाते हैं।।

माला सिंह(स०अ०)उच्च
प्रा०वि०-भरौटा(1-8)
ब्लॉक-सरधना
जनपद-मेरठ

3

रेलगाड़ी का सफर

रेलगाड़ी का सफर,
होता बड़ा ही सुन्दर।
छुक-छुक कर यह चलती,
मंजिल तक हमें पहुंचाती।।

पटरी पर यह दौड़ लगाती,
स्टेशन पर यह रूक जाती।
सीटी बजाकर फिर चल देती,
लोगों की भीड़ इसमें होती।।

आरती यादव(स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय रनियां -1
सरवनखेड़ा कानपुर देहात

4

नानाजी का बाग

नानाजी जी मेरे निराले,
पगड़ी लाल बाल घुंघराले।
नानी जी का स्वादिष्ट भोज,
मेरे दोस्तों की होती मौज।।

आम,अमरूद, जामुन भाई,
नानाजी ने तोड़ हमें खिलाई।
रखवाली बाग की करते नाना,
मेरे यह खुशियों का खजाना।।

नीलम भास्कर (स०अ०)
पी एम श्री उ०प्रा०वि०सिसाना
बागपत, बागपत

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

28/05/2026 गुरुवार

बाल साहित्य सृजन

1

फूल

फूल बड़े हैं प्यारे प्यारे,
नीले, पीले, न्यारे न्यारे।
तितली भी आ बैठी है,
रंग-बिरंगे हो गये सारे।।

खुशबू ये फैलाते रहते,
बदले में कुछ नहीं चाहते।
देखो बच्चों आपकी तरह,
हरदम हैं ये मुस्काते।।

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2

हँसते-गाते सीखें हम

सुबह-सुबह स्कूल को जाएँ,
नई बातें रोज़ ही पाएँ।
पढ़-लिखकर आगे बढ़ना है,
अपने सपनों को गढ़ना है॥

शिक्षक हमको राह दिखाते,
अच्छी-अच्छी बातें सिखाते।
हँसते-गाते पढ़ते बच्चे,
स्कूल लगते सबसे अच्छे॥

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3

गर्मी की छुट्टी

गर्मी की पड़ गई हैं छुट्टी,
बच्चों नानी के घर जाना।
बुआ भी आयेगी घर पर,
उनसे भी मिलने आ जाना।।

मस्ती करना, खूब खेलना,
पर इस सब में पढ़ते भी रहना।
मिला है जो हॉलिडे होमवर्क,
हर दिन उसको करते रहना।।

पारुल चौधरी (स·अ·)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4

गुब्बारें

लाल, नीले, पीले गुब्बारें,
गली में बिकने आये सारे।
गुब्बारे वाले ने आवाज लगाई,
चुन्नू-मुन्नू दौड़ लगाये दो भाई।।

रंग-बिरंगे गुब्बारे को तकते,
छूने को उनको, आतुर दिखते।
उछल-कूद फिर खूब मचाते,
पापा गुब्बारें दिलवाओ चिल्लाते।।

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ

29/05/2026 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1

तरबूज

गर्मी का फल तरबूज,
बाहर से होता हरा।
अंदर से है लाल लाल,
मीठे रस से भरा।।

काले इसके होते बीज,
गर्मी का फल तरबूज।
रोज कहना बच्चों,
पापा ला दो तरबूज।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

आम

गर्मी की छुट्टियों में,
फलों का राजा आया।
मीठ-मीठा स्वाद लेकर,
रसीला आम फिर आया।।

मैं तो रोज खाऊँगा,
आमपना भी बनाऊँगा।
दोस्तों संग मिलकर,
मैंगो पार्टी भी करूँगा।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3

लीची

गर्मियों के मौसम का,
फल होती है लीची।
खाने में बड़ी ही स्वादिष्ट,
और मीठी होती है लीची।।

रस से भरी गुच्छे मे,
महरून रंग की होती है लीची।
सभी को पसंद आती है,
गूदेदार मीठी लीची।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

आम

आम रसीला, आम रसीला
रंग है इसका पीला-पीला।
इसकी खुशबू सबको भाती,
इसे देख जीभ लपलपाती।।

स्वाद है इसका खट्टा-मीठा,
गर्मी के मौसम में आता।
अपने विशिष्ट गुणों के कारण,
फलों का राजा कहलाता।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.

शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें. 94582 78429

संकलन काव्यांजलि टीम मिशन शिक्षण संवाद

30.05.2026

बाल साहित्य सृजन

शनिवार

1

गरम धूप

तपते खेत और सूनी राहें,
गर्मी की दिखती हैं आहें।
सूरज दादा आग उगलते,
बैठ मुसाफ़िर हाथ हैं मलते।।

पक्षी ढूँढ़ें ठंडी डाली,
ताल पोखरे होते खाली।
फिर भी धूप का अपना मान,
पकते फल और बढ़ता धान।।

सुषमा त्रिपाठी स०अ०
कं० उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर),गोरखपुर

2

गर्म हवा

गर्म हवा के झोंके,
लगता है कोई रोके।
तपती धूप और गर्म हवा,
मैदानी क्षेत्रों में बहती हवा।।

गर्मियों का मौसम और
गर्म हवा के झोंके।
नींबू पानी पीकर आओ
लू लगने से रोकें।।

रचना
सुमन पाण्डेय प्र.अ
प्रा० वि० टिकरी मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

3

तपता सूरज

तपता सूरज आज का गोला,
भीषण गर्मी से तन झुलसाये।
कैसे मिले राहत इस गरमी से,
ऐसा नहीं कोई उपाय दिखाए।।

सूरज दादा मानो हैं गुस्सा,
डाँट रहे मानो रौद्र रूप दिखलाए।
व्याकुल है सब धरती वासी,
सूख रहे पेड़ हमारे पक्षी अकुलाए।।

रचना -
प्रतिमा उमराव स०अ०
क० वि० अमौली
अमौली, फतेहपुर

4

तेज आंधी

उड़ती चादर, गिरते बर्तन,
देख के घबरा जाता है मन।
खिड़कियाँ बजती डर के मारे,
लोग दुबक कर बैठे सारे।।

आँधी है शक्ति का प्रतीक,
इसकी है प्रचण्डता से प्रीत।
प्रकृति की है अद्भुद रीत।
विनाश, सृजन दोनो का गीत।।

रचना
रूपी त्रिपाठी(स०अ०)
उ०प्रा०वि०लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

रचनाकारों की सूची

1- बृजराज सारस्वत, मथुरा
2- भावना शर्मा, मेरठ
3- शालिनी, मैनपुरी
4- सीमा शर्मा, बागपत
5- नैमिष शर्मा, मथुरा
6- उमा ठाकुर, मथुरा
7- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
8- ज्योति विश्वकर्मा, बाँदा
9- आरती यादव, कानपुर देहात
10- इला सिंह, फतेहपुर
11- नीलम भास्कर, बागपत
12- माला सिंह, मेरठ
13- पारुल चौधरी, बागपत
14- वन्दना यादव, जौनपुर
15- शिप्रा सिंह, फतेहपुर
16- ज्योति सागर, बागपत
17- पूनम नैन, बागपत
18- अमित गोयल, बागपत
19- अनुप्रिया यादव, फतेहपुर
20- मृदुला वर्मा, कानपुर देहात
21- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
22- सुमन पाण्डेय, फतेहपुर
23- सुषमा त्रिपाठी, गोरखपुर
24- रूपी त्रिपाठी, कानपुर देहात

तकनीकी सहयोग

1- नैमिष शर्मा, मथुरा
2- जितेन्द्र कुमार, बागपत

मार्गदर्शन- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलन :- काव्यांजलि दैनिक सृजन टीम